महिला खिलाड़ियों ने लगाई सफलता की लंबी छलांग

क्लेयर स्मिथ

अमेरिका में लड़कियों और महिलाओं की संगठित खेलों के सभी स्तरों पर भागीदारी अभूतपूर्व ढंग से बढ़ी है। इसका श्रेय जाता है लोगों के रवैए में बदलाव और ऐतिहासिक कानून को।

टिम जॉनसन © ए. पी. - ब्लूम्बर्ग न्यूज़ पी.

ह्यूस्टन में मई 2005 में महिला राष्ट्रीय बास्केटबॉल एसोसिएशन के प्री-सीजन खेलों के दौरान कनेक्टीकट सन की लिंडसे व्हेलन (13) बास्केट करने के लिए छलांग लगाते हुए। ह्यूस्टन कॉमेट्स की जैनेथ अर्केन (9) उन्हें रोकने की कोशिश कर रही हैं।

जब सी. विवियन स्ट्रिंगर ने 1982 में पेंसिल्वेनिया के छोटे से चेनी स्टेट कॉलेज की अपनी महिला बास्केटबॉल टीम को पहली महिला राष्ट्रीय चैंपियनशिप के लिए क्वालीफाई करते देखा तो उनके लिए यह चांद छूने की तरह था। इस चैंपियनशिप को नेशनल कॉलेजिएट एथलेटिक एसोसिएशन (एन सी ए ए) की मान्यता हासिल थी। उस समय उनके शानदार खेल कैरियर की शुरुआत ही हुई थी। एन सी ए ए के लिए अगर यह सिर्फ नया, अब तक अनदेखा क्षेत्र था तो महिलाओं के लिए अभूतपूर्व बात थी। एन सी ए ए अमेरिका के अंतर्महाविद्यालय खेलों का प्रबंधन करने वाला प्रमुख संगठन है जो सालों से पुरूषों के सभी महत्वपूर्ण चैंपियनशिप टूर्नामेंटों को प्रायोजित करता आ रहा है।

महिला बास्केटबॉल के जाने-पहचाने नामी नामों की उपलब्धियां भी पुरूषों की बड़ी खेल प्रतियोगिताओं के मुकाबले फीकी दिखती थीं जिन्हें दिल खोल कर अनुदान मिलता था और जिन्हें टेलिविजन पर दिखाए जाने से अच्छी कमाई होती थी। इस माहौल में, पहली चैंपियनशिप के लिए क्वालिफाई करने के लिए स्ट्रिंगर की टीम के लिए सबसे पहली चुनौती थी वहां पहुंचना।

दक्षिणी-पूर्वी पेंसिल्वेनिया के देहाती इलाके से नॉरफॉक, वर्जीनिया में ओल्ड डोमिनियन यूनिवर्सिटी के परिसर में आयोजित उद्घाटन खेल तक पहुंचने की राह आसान नहीं थी। इस परंपरागत रूप से अश्वेत कॉलेज की टीम और स्ट्रिंगर ने धन जुटाने के सभी तरीके आजमाए- खाने-पीने के सामान की बिक्री, लॉटरी, अनुदान का आग्रह। स्ट्रिंगर बताती हैं, ''मुझे याद है पैसे मांगने के लिए एक चर्च में गई थी ताकि हम अपने स्वेटरों पर सफेद धागे से 'सी' कढ़वा सकें और हवाईजहाज में चढ़ते समय कुछ ठीकठाक लगें।'' उनकी टीम लुइसियाना टेक से हार गई थी। ''खेलों का सामान बेचनवाले एक स्टोर ने हमे वर्दियां दीं ताकि हमारे पास वर्दियों के एक से ज्यादा सेट रहें। हमारे कॉलेज के प्रशासन ने स्थानीय कंपनियों से मदद मांगी। कॉलेज परिसर में हार से ज्यादा हमारी जीत का डर सता रहा था - जीते तो अगले दौर के खेल में जाने के लिए खर्चा कहां से जुटेगा?''

अब बीसवीं सदी के आखिरी साल पर नजर डालें। पिस्कैटवे, न्यूजर्सी में स्ट्रिंगर राष्ट्रीय रैंकिंग वाली अपनी मौजूदा टीम रजर्स यूनिवर्सिटी को प्रशिक्षण दे रही हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ जॉर्जिया को हराकर जब उनकी टीम एन सी ए ए वेस्टर्न कांफ्रेंस फाइनल में पहुंची तो वह स्ट्रिंगर के प्रशिक्षण में अंतिम चार तक पहुंचने वाली तीसरी टीम थी। अब उसका मुकाबला बाकी तीन क्षेत्रों की विजेता

टीमों से था। तब तक स्ट्रिंगर बहुत कुछ सीख चुकी थीं। ऐसी टीमों के लिए अब एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए आला दर्जे की व्यवस्था थी।

मीडिया और दर्शकों की भीड़

इक्कीसवीं सदी की शुरूआत में चैंपियन बनने की ओर अग्रसर इन महिला टीमों के लिए अव्वल दर्जे से कम इंतजाम नहीं होते थे। महिला खिलाड़ियों की पहुंच राष्ट्रीय टेलिविजन दर्शक वर्ग तक भी हुई और उन्हें राष्ट्रीय टेलिविजन चैनलों से आर्थिक सहायता भी मिली। इसके अलावा वे उन तमाम सुविधाओं की अधिकारी भी बन गई हैं जो अब तक सिर्फ पुरुष बास्केटबॉल खिलाड़ियों को ही उपलब्ध थीं। मीडिया में जबर्दस्त कवरेज के अलावा अब उन्हें टीम के लिए खासतौर पर बनी बसें, खासतौर पर टीम के लिए किराए पर लिए गए हवाईजहाज और बेहतरीन होटलों में ठहरने के अलावा उनका समर्थन करने वाले वफादार प्रशंसक भी हासिल थे। वर्ष 2000 की चैंपियनशिप के आखिरी दौर का खेल किसी उनींदे से कॉलेज में नहीं, फिलाडेल्फिया के चमचमाते 20,000 सीटों वाले खेल स्टेडियम में हुआ था। रजर्स यूनिवर्सिटी ऑफ टेनेसी और यूनिवर्सिटी ऑफ कॉनेक्टीकट की राष्ट्रीय ख्याति वाली टीमों का खेल देखने के लिए दर्शक उमड़ पड़े। 10-12 साल के आयु वर्ग की लड़कियों में इन टीमों की लोकप्रियता की तुलना कुछ बरस पहले की बीट्ल्स की लोकप्रियता से ही की जा सकती है। टेलिविजन में प्राइम टाइम पर पूरे देश में दिखाए गए दो दिन के इस आयोजन के तमाम टिकट अग्रिम बिक गए थे। सेमीफाइनल के दौर को देखने के लिए जितने दर्शक आए उतने पेंसिल्वेनिया में आयोजित महिला या पुरूषों की किसी भी खेल प्रतियोगिता को देखने के लिए कभी नहीं आए थे। इसके अलावा संवाददाताओं, खेल टिप्पणीकारों और मीडिया के अन्य लोगों की उपस्थिति भी रिकॉर्डतोड़ संख्या में रही। अब महिला बास्केटबॉल के नामी चेहरों में शामिल हो चुकी स्ट्रिंगर कहतीं हैं कि 2000 का वह सप्ताहांत एक महत्वपूर्ण घटना थी। उस विशाल स्टेडियम में खचाखच भरे दर्शक और फिलाडेल्फिया और बाकी जगहों पर बास्केटबॉल की जबर्दस्त लोकप्रियता। वर्ष 1982 में तो हम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे।''

अमेरिका के खेल के मैदानों पर प्रतिभाशाली महिला एथलीटों की भीड़ लगाने में 1960 और 1970 के दशकों का महिला आंदोलन भी मददगार रहा। लेकिन असली सूरत बदली राष्ट्रपति निक्सन द्वारा 1972 में टाइटल-नौ नामक कानून को मंजूरी देने से। इससे एथलेटिक्स समेत शिक्षा के सभी पहलुओं में महिलाओं को पुरुषों की बराबरी का अधिकार मिला।

हाल के दशकों में महिला खेलों में कई स्तरों पर जबर्दस्त बदलाव आए हैं। लेकिन इन बदलावों की राह आसान नहीं रही है- टिकटों की बिक्री न होने और कम आय के कारण वीमेंस युनाइटेड सॉकर एसोसिएशन ठप्प हो गई। फिर भी, युवा कार्यक्रमों से लेकर सैकेंडरी स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर से प्रोफेशनल लीग और प्रतियोगिताओं तक का महिला खिलाड़ियों का सफर अभूतपूर्व ही है।

एल्थीया गिब्सन और बिल्ली जीन किंग जैसी दंतकथा बन चुकी महिला टेनिस खिलाड़ियों ने सेरिना और वीनस विलियम्स जैसी आज की महिला टेनिस खिलाड़ियों को दुनियाभर में मिली ख्याति और जबर्दस्त कमाई की शायद कल्पना तक न की हो। गोल्फ की महानायिका बेब डिडरिक्सन जहारियास ने शायद कभी न सोचा हो कि स्त्रियों में गोल्फ इस हद तक लोकप्रिय होगा और स्वीडन की अन्निका सॉरेनस्टैम और दक्षिणी कोरिया की से री पाक जैसी अंतर्राष्ट्रीय तारिकाएं दुनिया को देगा ।

नए कानून ने दी रफ्तार

अमेरिकी खेल मैदानों पर प्रतिभाशाली महिला खिलाड़ियों की बाढ़ और उन्हें प्राप्त होने वाले अवसरों में नि:सन्देह 1960 और 70 के दशकों के महिला अधिकार आंदोलन का योगदान रहा है। इसने हर स्तर पर महिलाओं को खुद को सशक्त बनाने पर जोर दिया । लेकिन असली रफ्तार मिली ऐतिहासिक अमेरिकी कानून टाइटल-नौ से। 1972 में राष्ट्रपति निक्सन ने इस कानून पर हस्ताक्षर करके शिक्षा के हर क्षेत्र में लड़कियों और महिलाओं के लिए समान अधिकार सुनिश्चित किए।

कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में इस कानून को लागू करने से महिला खिलाड़ियों और अमेरिका में खेलों को संचालित-प्रबंधित करने वाले संस्थानों जैसे एन सी ए ए, ओलिंपिक्स और टेलिविजन आदि की साझेदारी की शुरूआत हुई। शौकिया प्रतियोगिताओं के दरवाजों के साथ ही अमेरिकी कार्पोरेट जगत के दरवाजे भी महिलाओं के लिए खुले और प्रोफेशनल महिला प्रतियोगिताओं के लिए ज्यादा प्रायोजक आने लगे।

बहुत से लोगों में इस बात पर विवाद है कि टाइटल-नौ ठीक से या पूरी तरह से लागू हो पाया है या नहीं, या इसने अपना उद्देश्य हासिल किया या नहीं। आज भी अमेरिकी विश्वविद्यालय परिसरों में फुटबॉल और पुरूषों की बास्केटबॉल प्रतियोगिताओं का ही दबदबा है। यह तर्क भी दिया जाता है कि टाइटल-नौ ने महिला-पुरुष विवाद की आग में घी डालने का काम किया है। इस कानून के लागू होने से पुरुषों की खेल प्रतियोगिताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की बात कही जाती है। अमेरिका जनरल अकांउटिंग ऑफिस द्वारा 2002 में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि 1982 और 1999 के बीच अमेरिका अंतर-विश्वविद्यालयी खेल क्रार्यक्रमों से पुरूषों की पहलवानी, तैराकी, और टेनिस की 311 टीमों को हटा दिया गया।

विवादों के बावजूद टाइटल-नौ बरकरार है। जुलाई 2003 में, साल भर चली समीक्षा के बाद अमेरिकी शिक्षा विभाग ने एक रपट जारी करके बहुत मामूली फेरबदल के साथ टाइटल-नौ के नियम-कायदों को स्वीकृति दे दी। टाइटल-नौ को गंभीरता से लेने के अमेरिकी निश्चय का प्रमाण पेंसिल्वेनिया के एक फेडेरल न्यायाधीश द्वारा नवंबर 2003 में अपने अधिकार क्षेत्र के एक विश्वविद्यालय को स्त्रियों का जिम्नास्टिक्स कार्यक्रम फिर से शुरू करने के लिए दिया गया आदेश है। बजट की कमी और सरकार से मिलनेवाले अनुदान में कमी के कारण वेस्ट चेस्टर विश्वविद्यालय ने अप्रैल 2003 में स्त्रियों के जिम्नास्टिक्स कार्यक्रम और पुरूषों की लाक्रॉस टीम को

खत्म कर दिया। लेकिन पुरूष खिलाड़ियों की अधिक संख्या को देखते हुए अदालत ने माना कि विश्वविद्यालय टाइटल-नौ के तहत महिला खिलाड़ियों के अनुपात को बनाए रखने के अपने दायित्व को नहीं निभा रहा। आज विश्वविद्यालय की खेल गतिविधियों में जिम्नास्टिक्स शामिल है।

इस कानून के गुण-अवगुणों और दूरगामी प्रभावों पर बहस कभी खत्म नहीं होगी लेकिन इस तथ्य पर बहस की कतई गुंजाइश नहीं है कि टाइटल-नौ ने अमेरिका के खेल परिदृश्य को सदा के लिए बदल दिया है ।

महिलाओं का पेशेवर बास्केटबॉल

30 साल पहले महिला खिलाड़ी प्रोफेशनल वीमेंस नेशनल बास्केटबॉल एसोसिएशन की चमक-दमक और ग्लैमर की कल्पना तक नहीं कर सकती थी। आज बड़े-बड़े शहरों में आधुनिकतम सुविधाओं से लैस स्टेडियमों में इसके मुकाबले होते हैं। दो बार विश्व चैंपियन रह चुकी लॉस एंजिलीस की महिला बास्केटबॉल टीम लॉस एंजिलीस स्पार्क्स के शहर के बीच स्थित शानदार स्टेपल्स सेंटर स्टेडियम में खेले जा रहे किसी भी मुकाबले को रेडियो और टेलिविजन पर उतना ही समय मिलता है जितना स्पार्क्स को प्रायोजित करनेवाली नेशनल बास्केटबॉल एसोसिएशन (एन बी ए) की विख्यात टीम लेकर्स के पुरूष खिलाड़ियों को।

न्यूयॉर्क की बास्केटबॉल टीम न्यूयॉर्क लिबर्टी का जिक्र करते हुए स्ट्रिंगर कहती है, ''न्यूयॉर्क लिबर्टी का खेल देखने के लिए मैडिसन स्क्वेयर गार्डन में प्रवेश करते हुए मेरे कदम ठिठक जाते हैं और मेरे मन में कौंधता है- यह महिलाओं का पेशेवर बास्केटबॉल है! कुछ चीजें तो ऐसी हो रहीं हैं कि उनके बारे में हम सोच ही नहीं पाते थे।''

टाइटल-नौ ने स्त्रियों की खेल प्रतियोगिताओं को मजबूती से अपनी जगह बनाने का अवसर तो दिया ही, खेल के मैंदानों में भी अवसरों की बौछार कर दी। आंकड़े गवाह हैं कि अब लड़कियां दर्शक या चीयरलीडर की भूमिकाओं से आगे बढ़ रही हैं। गैर-लाभकारी संगठन वीमेंस स्पोर्ट्स फाउंडेशन के अनुसार टाइटल-नौ लागू होने से पहले तक सैकेंडरी स्कूल के स्तर पर औसतन 27 में से एक लड़की खेलों में भाग लेती थी। आज हर तीसरी लड़की खेलों में भाग ले रही है। शिक्षा विभाग के आंकड़े बताते हैं कि कॉलेज स्तर पर आज करीब 150,000 लड़कियां खेल रही हैं। 1972 में इसकी करीब 20 फीसदी ही यानी कुल 32,000 लड़कियां कॉलेज स्तरीय खेलों में भाग लेती थीं।

इन आंकड़ों के पीछे सफलता की कई कहानियां छिपी हैं। उदाहरण के लिए स्त्रियों को पहलेपहल एन.सी.ए.ए. के स्तर पर अभूतपूर्व सम्मान का स्थान बास्केटबॉल, सॉकर या सॉफ्टबॉल ने नहीं, रोइंग प्रतियोगिता में मिला। जनवरी 1996 में एन सी ए ए ने अपने महिला रोइंग डिवीजन को चैंपियनशिप का स्तर दिया लेकिन पुरुषों को नहीं। इस फैसले का मतलब था कि एन सी ए ए इसकी राष्ट्रीय चैंपियनशिप का खर्चा उठाएगी और ऐतिहासिक रूप से स्त्रियों और पुरूषों दोनों की जबर्दस्त भागीदारी वाले इस खेल में एन सी ए ए की स्वीकृति और चैंपियनशिप का सम्मान सिर्फ महिला टीम को मिला।

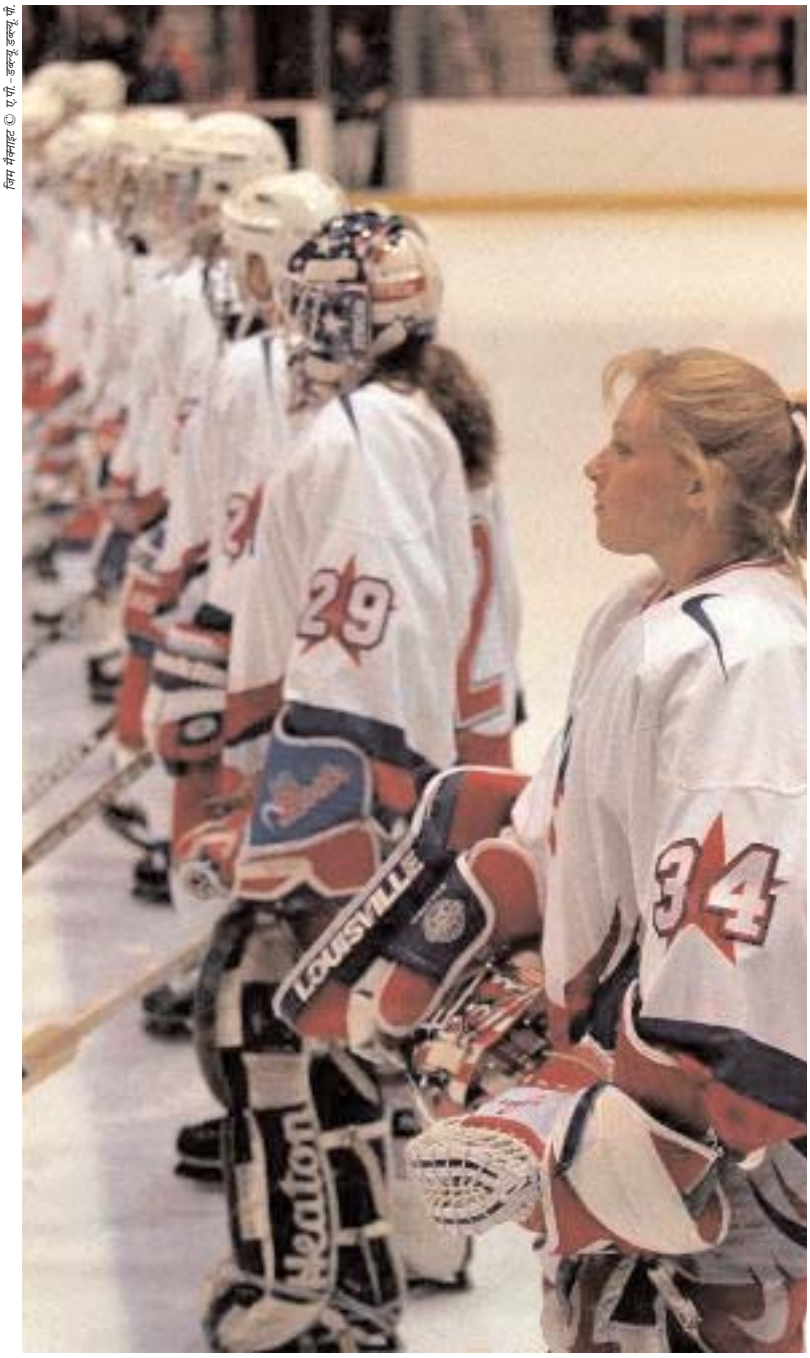

विन मैकनामी © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

लेक प्लैसिड, न्यूयॉर्क (मार्च 1997) में दूसरा मैच शुरू होने से पहले अमेरिकी महिला राष्ट्रीय आइस हॉकी टीम की गोलकीपर एरिन व्हिटेन (34) और अन्य सदस्यों का रूसी महिला आइस हॉकी टीम से परिचय कराया जा रहा है। अमेरिका ने यह मैच 13-0 से जीता।

बिना शोरशराबे के जबर्दस्त सफलता का इतिहास रचनेवाला एक नाम है- निक्की फ्रैंक। टेंपल यूनिवर्सिटी के प्रसिद्ध तलवारबाजी कार्यक्रम की अर्से से कोच रही यह भूतपूर्व ओलिंपिक महिला खिलाड़ी अपनी टीम के विकास को सीधे टाइटल-नौ से जोड़कर देखती हैं । 1972 में जब टाइटल-नौ लागू हुआ तो विश्वविद्यालय ने महिलाओं की तलवारबाजी को शौकिया क्लबों के स्तर से बढ़ाकर प्रतियोगी खेल का दर्जा दिया। फ्रैंके याद करती हैं, ''उन दिनों इस खेल के लिए छात्रवृति का प्रावधान तो नहीं था, लेकिन विश्वविद्यालय की टीम जरूर थी। बस ऐसे ही शुरूआत हुई ।'' वह बताती हैं कि उनकी टीम के बहुत सम्मान पाने के बावजूद वह सैकेंडरी स्कूल के स्तर पर कभी प्रतियोगिता में न उतरी लड़कियों को भी खेलने का मौका देती हैं। ''अगर कोई लड़की सीखना और मेहनत करना चाहती है तो हम उसे टीम से जुड़ने का मौका जरूर देंगे।''

जून 2005 में चारलोट्सविल्ले, वर्जीनिया के क्लोकनेर स्टेडियम में अमेरिकी महिला राष्ट्रीय फुटबाल टीम के साथ प्रेक्टिस करतीं टिफेनी मिल्ब्रेट।

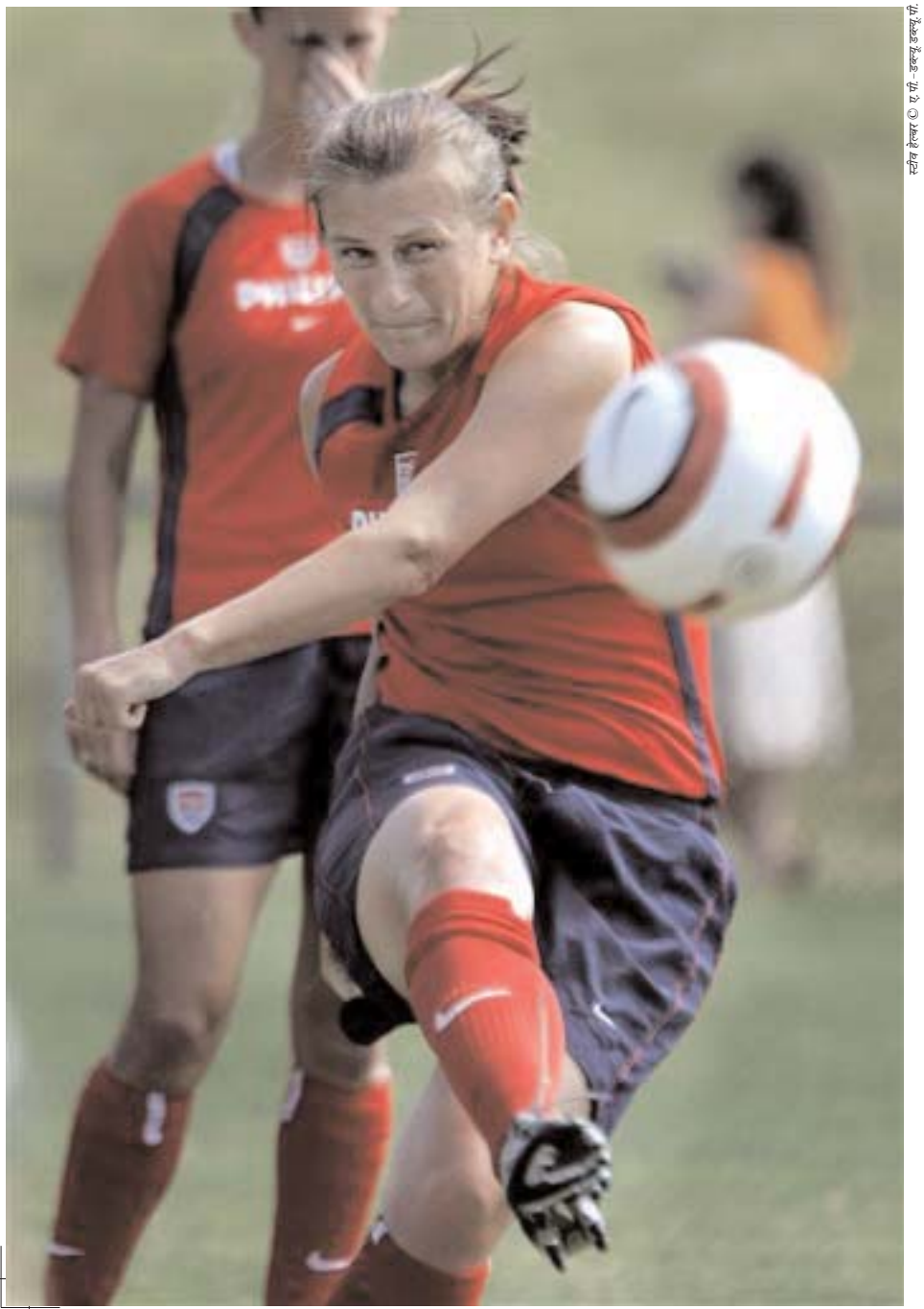

स्टीव हेल्मर © ए पी - डब्ल्यू डब्ल्यू पी.

थमी नहीं चुनौतियां

लेकिन चुनौतियां भी बनी रही हैं। प्रशिक्षकों में महिलाओं की संख्या अब भी कम ही है। पुरुषों जैसा बनने की चाहत का अंजाम यह हुआ कि कुछ मायनों में महिलाओं के खेल पुरुषों के हवाले कर देने पड़े। हां, फ्रैंके से सफलताओं का अटूट सिलसिला जुड़ा है लेकिन वह खासी अकेली ही हैं। 2002 तक फ्रैंके सबसे बेहतरीन 10 तलवारबाजी टीमों की मुख्य प्रशिक्षकों के तौर पर काम कर रही कुल तीन महिलाओं में से एक थीं। स्ट्रिंगर कहती हैं, ''मैं चाहूंगी कि बहुत बड़ी संख्या में महिलाएं खेलों में आगे आएं। प्रशिक्षक के स्तर पर उनकी संख्या बढ़नी चाहिए। इस मामले में महिलाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।''

अमेरिका में महिलाओं के खेलों को महिलाओं की जरूरत उपभोक्ताओं के रूप में भी है। अब जब महिलाओं की कमाने की क्षमता में खासी वृद्धि हुई है तो उन्हें अपने पैसे को महिलाओं की खेल प्रतियोगिताओं पर भी खर्च करना चाहिए। सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ियों के होते हुए भी वीमेंस युनाइटेड सॉकर एसोसिएशन के ठप्प होने के पीछे कारण था अमेरिकी अर्थव्यवस्था में मंदी के दौर में कार्पोरेट मदद और प्रायोजकों की कमी। यह बहुत हताश करने वाली घटना थी।

सॉकर असोसिएशन की एक भूतपूर्व अधिकारी लिन मॉर्गन कहती हैं,''यह हताश करता है। हम इतनी मेहनत करते हैं, इतने प्रयास करते हैं लेकिन प्रगति बहुत धीमी रफ्तार से होती है। हम देखते हैं कि कितनी जबर्दस्त संभावनाएं हैं लेकिन वहां तक पहुंचने के लिए जरूरी लम्बी छलांग लगा ही नहीं पाते।'' पेशेवर लीगों में अब 14 टीमों वाली वीमेंस नेशनल बास्केटबॉल एसोसिएशन ही बची है जिसे एन बी ए के कमिश्नर डेविड स्टर्न का पूरा समर्थन प्राप्त है। लेकिन वीमेंस नेशनल बास्केटबॉल एसोसिएशन को भी अपनी आमदनी बढ़ानी होगी, नहीं तो इसका हश्र भी वीमेंस युनाइटेड सॉकर एसोसिएशन जैसा ही हो सकता है।

खेल के मैदान से आगे

महिलाओं के खेलों के लिए जहां चुनौतियां हैं, वहां सफलताएं भी बहुत हैं। खेल के मैदान के परे नजर दौड़ाएं तो खेल पत्रकारों और खेल प्रसारणकर्ताओं में बहुत-सी महिलाएं दिखाई देती हैं। कभी यह क्षेत्र सिर्फ पुरुषों तक सीमित था। अब अमेरिका में टेनिस और गोल्फ के टेलिविजन प्रसारणों में अक्सर महिलाएं कमेंटरी और घोषणाएं करती मिलती हैं। फुटबॉल और बास्केटबॉल के खेलों में भी वे अतिरिक्त टिप्पणियां जुटाती पाई जाती हैं। और वे सिर्फ रौनक नहीं बढ़ा रही होती हैं, वे गंभीर खेल पत्रकारिता करतीं हैं।

1970 और 80 के दशकों में एक दौर ऐसा भी था जब खेल खत्म होने के बाद खिलाड़ियों के साक्षात्कार लेने के लिए पेशेवर टीमों के लॉकर रूम में जाने के लिए महिलाओं को कड़ी जद्दोजहद करनी पड़ी। दोहरे मापदंड अपनाए जाना जारी था। 1990 के जमाने में एक बातचीत में ई एस पी एन केबल नेटवर्क के प्रसारणकर्ता क्रिस बेमैन

द्वारा यूनिवर्सल प्रेस सिंडिकेट

ने देखा कि वे किसी के नाम का गलत उच्चारण करें तो कुछ नहीं होगा, लेकिन कोई महिला ऐसा करे तो वह बहुत झंझट में फंस जाएगी। ''अब आप इसे सही मानें या गलत, कुछ दर्शक महिलाओं को निर्दोष सिद्ध होने तक दोषी ही मानेंगे और पुरूषों को दोषी सिद्ध होने तक निर्दोष।''

लेकिन धीरे-धीरे आलोचना और दोहरे मापदंड पीछे छूटे हैं। 1984 में जब इस संवाददाता को पेशेवर बेसबॉल टीम सैन डिएगो पाद्रेज के लॉकर रूम से बाहर धकियाया गया तो पुरूषों के गढ़ माने जानेवाले विभिन्न संस्थानों की प्रतिक्रिया बहुत मददगार साबित हुई। द बेसबॉल राइटर्स एसोसिएशन ऑफ अमेरिका ने बेसबॉल कमिश्नर के कार्यालय को पत्र लिखकर पाद्रेज की नीति का विरोध किया- और यह विरोध एक स्त्री को उसके कार्यस्थल से हटाए जाने पर नहीं एक बेसबॉल पत्रकार को हटाए जाने पर था ।

1984 में बेसबॉल कमिश्नर का पद ग्रहण करने के महीने भर के अंदर ही पीटर उबेरॉथ ने महिलाओं समेत सभी अधिकृत पत्रकारों के लिए पेशेवर बेसबॉल के दरवाजे खोल दिए। ए बी ए और नेशनल हॉकी लीग पहले ही ऐसा कर चुके थे। आखिर नेशनल फुटबॉल लीग ने भी यही राह अपनाई और इस तरह अर्से से अदालतों और देशभर के स्टेडियमों में चली आ रही कशमकश खत्म हुई।

उबेरॉथ के फैसले जैसा ही अविस्मरणीय था पाद्रेज के फर्स्ट बेसमैन स्टीव गार्वे का फैसला। मुझे धकिया कर बाहर किए जाने पर वह भी मेरे साथ ही लॉकर रूम से बाहर चले आए ताकि मेरे पास खेल पर मेरी रपट के साथ कम-से-कम एक साक्षात्कार तो हो। स्थिति को शांत रखने की कोशिश करते गार्वे ने मुझसे कहा, '' तुम जितनी देर कहो, मैं उतनी देर तुमसे बात करूंगा लेकिन तुम धीरज से काम लो। तुम्हें अपना काम करना है।'' दो दिन बाद गार्वे ने अपनी बात स्पष्ट की, '' तुम्हें अपना काम करना था और उसे करने का तुम्हें पूरा अधिकार था।'' गार्वे ने इस पूरे संघर्ष और उसे जारी रखने की जरूरत का निचोड़ बता दिया था। □

सितंबर 1994 में जॉर्जिया के अटलांटा-फल्टन काउंटी स्टेडियम में कोलोरेडो सिल्वर बुलेट्स की पिचर ली एन कैचम पुरुषों की सीनियर बेसबाल लीग टीम के विरुद्ध अपना कौशल दिखाते हुए। सिल्वर बुलेट्स 9-6 से हार गई।

लेखकः *क्लेयर स्मिथ फिलाडेल्फिया, पेन्सिल्वेनिया के फिलाडेल्फिया इंक्वायरर में सहायक खेल संपादक हैं।*